'बुद्धचरितम्' (प्रथम सर्ग की कथावस्तु)

महाकवि अश्वघोष द्वारा प्रणीत 'बुद्धचरित' एक उत्कृष्ट कोटि का दार्शनिक महाकाव्य है। इसमें भगवान् बुद्ध के चारित्रिक वैशिष्ट्यों का विशद् वर्णन है।

बुद्धचरित महाकाव्य के प्रथम सर्ग में भगवान बुद्ध के जन्म का वर्णन है। इक्ष्वाकु वंश के अजेय शाक्यों के अधिपति इक्ष्वाकु के समान प्रभावशाली, पवित्र आचरण से युक्त, प्रजाओं के लिये शरच्चन्द्र की भाँति प्रिय राजा शुद्धोधन हुये। उनकी शीलवती महारानी का नाम माया देवी था जिसके साथ महाराज ने देवदुर्लभ सुखों का उपभोग किया। तदुपरान्त कुछ काल व्यतीत होने पर माया देवी ने गर्भ-धारण करने के पूर्व स्वप्न में एक श्वेत नागेन्द्र (गजराज) को अपने शरीर में प्रविष्ट होते हुये देखा, परिणामतः गर्भ में वंशश्री को धारण किया। गर्भकाल पूर्ण होने के समय रानी को वनविहार का दोहद हुआ जिसे भूपति ने सहर्ष स्वीकार किया —

तस्य विदित्वा नृप आर्यभावं,
धर्म्यश्च हृष्टः सुतरामनन्दत्।
इच्छाविघातादरतिं विशङ्क्य,
तत्प्रीतये चाशु विनिर्जगाम ॥1/7॥

तत्पश्चात् लुम्बिनी नामक वन में जो नन्दन वन की समानता में थोड़ा भी कम नहीं था, पुष्यनक्षत्र के पवित्र रात्रि में बुद्ध का महामाया के पार्श्वभाग से जन्म हुआ —

ऊरोर्यथौर्वस्य पृथोश्च हस्तान्मान्धातुरिन्द्रप्रतिमस्य मूर्ध्नः।
कक्षीवतश्चैव भुजांसदेशात्तथाविधं तस्य बभूव जन्म ॥

इस अयोनिज बुद्ध ने जन्म लेते ही भविष्यवाणी की —

बोधाय जातोऽस्मि जगद्धितार्थमन्त्या भवोत्पत्तिरियं ममेति ॥

अर्थात् विश्वकल्याण के लिये एवं ज्ञान प्राप्ति के लिये मैंने जन्म ग्रहण किया है, संसार में यह मेरा अन्तिम जन्म है। बुद्ध को लक्ष्यकर देवताओं ने उन्हें आशीष दिया। आकाश से सुगन्धयुक्त मन्दार तथा लाल नीले कमलपुष्पों की वृष्टि हुई, सूर्य अधिक चमका, वायु स्पर्शसुख देने वाली मनोहर

बहने लगी। पेड़ो पर आकाश कुसुम निकले, मानव जाति के रोग अनायास दूर हो गये, पक्षियों ने मधुर नाद किया, सभी दिशायें स्वच्छ हो गयीं तथा मेघों से रहित निर्मल आकाश में दुन्दुभियाँ बजने लगीं —

कले प्रणेदुः मृगपक्षिणश्च शान्ताम्बुवाहाः सरितो बभूवुः।
दिशः प्रसेदुर्विमले निरभ्रे विहायसे दुन्दुभयो निनेदुः॥ 1/26॥

इस प्रकार सभी आनन्दित हुये। एकमात्र कामदेव को आनन्द नहीं हुआ — "एको न मारो मुदमाप लोके"।

समस्त शुभाशुभ शकुनों पर विचारकर ब्राह्मणो ने राजा से कहा कि दुःखी संसार के उद्धार के लिये जन्म लेने वाले देश के दीपतुल्य आपका पुत्र या तो ग्रहों में सूर्य की भाँति श्रेष्ठ होगा अथवा पर्वतों में सुमेरु की भाँति ज्ञानियो का शिरोमणि होगा॥

राजा द्वारा अपने ही पुत्र में इन विशिष्ट लक्षणो का कारण पूछने पर ब्राह्मणो ने कहा —

तस्मात्प्रमाणं न वयो न वंशः कश्चित् क्वचिच्छ्रैष्ठ्यमुपैति लोके।
राज्ञामृषीणां च हि तानि तानि कृतानि पुत्रैरकृतानि पूर्वैः॥ 1/46

अर्थात् संसार में कोई भी कहीं भी श्रेष्ठता प्राप्त कर सकता है इसलिये प्रमाण न वयस है न वंश'। इस प्रकार द्विजों के आश्वासन से आश्वस्त हो राजा ने अनिष्ट शङ्का का परित्याग किया। उसी समय राजा की पुत्रप्राप्ति की सूचना दिव्यवाणी द्वारा पाकर महर्षि असित आकाश मार्ग से राज प्रासाद में आये। राजा ने उनका यथोचित सत्कार किया। राजपुत्र के शुभ शारीरिक लक्षणों को देख मुनी की आँखो में अश्रु भर आये। यह देख राजा किसी अनिष्ट की आशङ्का से काँप गये। उन्होने भारी स्वर में भावविह्वल हो इसका कारण पूछा —

कच्चिन्न मे जातमफुल्लमेव कुलप्रवालं परिशोषभागि।
क्षिप्रं विभो ब्रूहि न मेऽस्ति शान्तिः स्नेहं सुते वेत्सि हि बान्धवत्वाद्॥ 1/66

इस पर महर्षि असित ने कहा कि अपना अन्त समीप होने से ~~(कारण)~~ इस श्रेष्ठ ज्ञानी (राजपुत्र) के संसर्ग से वञ्चित रह जायेगें। इसी कारण वे उदास हैं।

पुन: ऋषि ने कहा —

प्रज्ञाम्बुवेगां स्थिरशीलवप्रां समाधिशीतां व्रतचक्रवाकाम् ।
अस्योत्तमां धर्मनदीं प्रवृत्तां तृष्णार्दित: पास्यति जीवलोक: ॥ 1/75

प्यास से आकुल यह संसार इसकी बहाई गई जिसमें प्रज्ञा जलप्रवाह है, अचलशील जिसके तट हैं, जो समाधिरूप शीत से युक्त है, व्रतरूपी चकवाक पक्षियों से घिरी हुई है, ऐसी धर्म सरिता में जलपान करेगा।

यह सब सुनकर तो राजा को अति प्रसन्नता हुई परन्तु पुन: - " अपवर्गमार्गेण तु यास्यतीति " यह सुनकर उनका हृदय कुछ चिंतित हो गया। पुत्र को आशीष दे असित मुनि वायुमार्ग से वापस चले गये। राजा ने पुत्र जन्म पर खुशियाँ मनायी। कैदियों को मुक्त कर दिया। पुत्र के कल्याण के लिये जप, होम आदि मङ्गल कर्म द्वारा देवयज्ञ किया। रानी ने हाथी के दाँत से निर्मित पालकी में समारुढ़ हो महल में पदार्पण किया। राजकुमार के समृद्धिकारी जन्म से कपिलवस्तु इस प्रकार प्रमुदित हुआ जैसे नलकूबर के जन्म से अप्सराओं से पूर्ण कुबेर का नगर —

इति नरपतिपुत्रजन्मवृद्धया सजनपदं कपिलाह्वयं पुरं तत् ।
धनदपुरमिवाप्सरोऽवकीर्णं मुदितमभून्नलकूबरप्रसूतौ ॥ 1/89

इस प्रकार भगवत्प्रसूति नामक बुद्धचरित के प्रथम सर्ग का सारांश संक्षेप में यही है।

— x —